नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

डिजिटल दादागिरी पर सुप्रीम कोर्ट की लगाम

भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में जो टिप्पणी और आदेश दिया, वह केवल मेटा और व्हाट्सएप के लिए चेतावनी नहीं है, बल्कि समूची बड़ी तकनीकी कंपनियों की संस्कृति के लिए एक स्पष्ट संदेश है. भारत कोई डिजिटल उपनिवेश नहीं है. यहां कारोबार करने का अधिकार तभी है, जब नागरिकों की निजता, सम्मान और संवैधानिक अधिकारों का पूरी निष्ठा से पालन हो.आज जब डेटा को नया तेल कहा जा रहा है, तब यह सवाल और भी गंभीर हो जाता है कि इस संसाधन का मालिक कौन है. बहुराष्ट्रीय कंपनियां या वह नागरिक, जिससे यह डेटा उत्पन्न होता है. व्हाट्सएप की 2021 की निजता नीति ने इसी मूल प्रश्न को चुनौती दी थी. स्वीकार करो या छोड़ दो जैसी शर्तें थोपकर कंपनी ने यह मान लिया था कि भारतीय उपभोक्ता विकल्पहीन हैं और उनकी सहमति केवल औपचारिकता है. सर्वोच्च न्यायालय ने इस सोच पर करारा प्रहार किया है.

मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की यह टिप्पणी कि यह 'सभ्य तरीके से की गई चोरी' है, डिजिटल युग के इतिहास में मील का पत्थर बन गई है. यह टिप्पणी केवल शब्दों की कठोरता नहीं, बल्कि उस कॉरपोरेट मानसिकता का पर्दाफाश है, जो उपयोगकर्ता की सहमति को मजबूरी में बदल देती है. न्यायालय ने स्पष्ट कर दिया है कि निजता का अधिकार कोई तकनीकी शर्त नहीं, बल्कि संविधान के अनुच्छेद 21 से जुड़ा मौलिक अधिकार है.अदालत का यह कहना कि यदि आप भारत के कानूनों का पालन नहीं कर सकते, तो भारत छोड़ने का विकल्प आपके पास है, आत्मसम्मान से भरे राष्ट्र की आवाज है. यह बयान डिजिटल संप्रभुता की स्पष्ट घोषणा है. वैश्वीकरण के दौर में भी यह स्वीकार करना होगा कि हर देश के अपने कानून हैं और उनका सम्मान करना ही व्यापार की पहली शर्त है. इस फैसले का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि व्हाट्सएप आज केवल एक संदेश भेजने वाला माध्यम नहीं रहा, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक संवाद का अनिवार्य साधन बन चुका है. ऐसे में उसकी एकाधिकार वाली स्थिति का दुरुपयोग कर डेटा साझा करने की शर्तें थोपना न केवल अनैतिक है, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों के भी विरुद्ध है. सर्वोच्च न्यायालय ने इस एकाधिकार को पहचाना और उस पर लगाम लगाने का साहस दिखाया है.एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यूरोपीय देशों के लिए अलग और भारत के लिए अलग निजता मानक अपनाने की प्रवृत्ति पर भी यह फैसला सीधा प्रहार करता है. भारतीय उपभोक्ता किसी भी रूप में दूसरे दर्जे के नागरिक नहीं हैं .यदि यूरोप के नागरिकों को कठोर डेटा सुरक्षा मिल सकती है, तो भारत उससे कम का अधिकारी नहीं हो सकता.

अंततः यह निर्णय भारतीय नागरिकों के डिजिटल अधिकारों की जीत है. यह भरोसा दिलाता है कि तकनीक कितनी भी बड़ी क्यों न हो जाए, संविधान उससे बड़ा है. अब गेंद मेटा के पाले में है. या तो वह भारतीय कानूनों और नागरिकों की निजता का सम्मान करे, या फिर भारत जैसे विशाल और संवेदनशील बाजार में अपने भविष्य पर पुनर्विचार करे. सर्वोच्च न्यायालय ने जो लकीर खींची है, वह डिजिटल दादागिरी और संवैधानिक मर्यादा के बीच एक स्पष्ट सीमा रेखा है. जाहिर है इसका स्वागत किया जाना चाहिए.

विकसित भारत के अग्रदूतों के भविष्य को संवारना

धर्मेंद्र प्रधान

इस वर्ष परीक्षा पे चर्चा का आयोजन भारत की शिक्षा यात्रा में शांत लेकिन निर्णायक परिवर्तन को रेखांकित करता है। माननीय प्रधानमंत्री के नेतृत्व में परिकल्पित यह पहल, जो 2018 में एक एकल वार्षिक संवाद के रूप में प्रारंभ हुई थी, आज स्वाभाविक रूप से एकजन आंदोलन का रूप ले चुकी है। अब यह एक राष्ट्रव्यापी सामूहिक प्रयास बन गई है, जिसमें विद्यार्थियों के समग्र कल्याण को केंद्र में रखा गया है और माता-पिता व शिक्षक इस साझा उत्तरदायित्व के सक्रिय सहभागी हैं।

इस वर्ष की सहभागिता का पैमाना इस पहल की गहराई को दर्शाता है।4.5 करोड़ से अधिक पंजीकरणों के साथपरीक्षा पे चर्चा, पूर्व गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड को पीछे छोड़ते हुएअब जन-संपर्क से आगे बढ़कर सामूहिक स्वामित्व की एक महत्वपूर्ण अवस्था में प्रवेश कर चुकी है। यह अभूतपूर्व सहभागिता सक्षम वातावरण निर्मित करने के सामूहिक संकल्प को प्रतिबिंबित करती है, जहाँ प्रत्येक बच्चा सीख सके, विकसित हो सके और सही मायनों में फल-फूल सके।

प्रधानमंत्री के प्रेरक नेतृत्व का प्रदर्शन: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का शिक्षा, अध्यसयन और परीक्षा से जुड़े तनाव जैसे विषयों पर विद्यार्थियों के साथ संवादसहानुभूति, व्यवहारिकता और प्रेरक नेतृत्वका विशिष्ट समन्वय प्रस्तुत करता है। सरलता, अनुशासन, आशावाद और मानव क्षमता में गहरी आस्था से परिपूर्ण उनके व्यक्तित्व ने लाखों बच्चों के मन पर गहरा और स्थायी प्रभाव अंकित किया है। औपचारिक प्रोटोकॉल की जटिलताओं से परे जाकर विद्यार्थियों से मार्गदर्शक, मेंटर और शुभचिंतकके रूप में जुड़ने की सहज क्षमता प्रधानमंत्री को विशिष्ट बनाती है। उनकी संवादात्मक, कथात्मक और आत्मीय शैली विद्यार्थियों को यह अनुभव कराती है कि उनकी बातें सुनी और समझी जा रही हैं। वे गर्मजोशी, हास्य और प्रामाणिकता के साथ संवाद करते हैं तथा अक्सर अपने जीवन के अनुभवों से उदाहरण लेकरधैर्य, एकाग्रता और आत्मबल जैसे व्यापक जीवन मूल्यों को सरलता से प्रस्तुत करते हैं। यह व्यक्तिगत स्पर्श परीक्षा से जुड़े दबावों को सहज बनाते हुए आश्वस्त और सकारात्मक वातावरण का निर्माण करता है, जहाँ विद्यार्थी आत्मविश्वास के साथ सीखने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित होते हैं।

प्रत्येक बच्चे की विशिष्टता की पहचान: इस प्रयास के केंद्र में एक सरल किंतु अत्यंत सशक्त सत्य निहित है- हर बच्चा विशिष्ट है। प्रत्येक बच्चा अलग तरह से सीखता है, अपनी गति से आगे बढ़ता है और अपने भीतर ऐसी प्रतिभाएँ समेटे होता है, जिन्हें अंकों या रैंक तक सीमित नहीं रखा जा सकता। परीक्षाएँ अपनी प्रकृति के अनुसार, बच्चे की क्षमता के सीमित पहलू को ही दर्शाती हैं।समग्र व्यक्तित्व के निर्माण के माध्यम से ही उसकी वास्तविक सृजनात्मकता और उत्कृष्टता का विकास होता है। कोई बच्चा गणित में उत्कृष्टता दिखा सकता है, कोई कलात्मक कल्पना में निपुण हो सकता है, और कोई करुणा के साथ संवेदनशील चिकित्सक बनने की क्षमता रखता है। ये भिन्नताएँ किसी तरह की कमी नहीं हैं; बल्कि यही विविध, सशक्त और नवोन्मेषी समाजकी आधारशिला हैं।

चुनौतियों का समाधान

फिर भी, हमें आज की एक विशिष्ट आधुनिक चुनौती—अत्यधिक डिजिटल उपयोग और स्क्रीन टाइम का सामना करना है । लंबे समय तक लगातार डिजिटल उपकरणों के संपर्क में रहने सेध्यान की क्षमता कम होती है, नींद में बाधा आती है और मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। लगातार कनेक्टिविटी, ऑनलाइन तुलना और डिजिटल अतिप्रेरणा का दबाव अक्सरपरीक्षा के तनाव को बढ़ा देता हैऔर उस माइंडफुल कमजोर कर देता है, जिसे हम बच्चों में विकसित करना चाहते हैं।यहीं परमाता-पिता और शिक्षक मिलकर भूमिका निभा सकते हैं।उपकरणों के उपयोग के लिएसुरक्षित सीमाएँ तय करके, साथ ही शारीरिक गतिविधियों, सृजनात्मक प्रयासों और पारिवारिक संवादजैसे विकल्पों के प्रति प्रोत्साहित करकेहम पुन- संतुलन स्थापित कर सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दर्शन का प्रतिबिंब: यह दर्शन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020के मूल में निहित है। इसके ढाँचे के अंतर्गत शिक्षण-पद्धतियों, पाठ्यक्रमों और मूल्यांकन प्रणालियों को एक वास्तविकबाल-केंद्रित दृष्टिकोणके अनुरूप पुनर्गठित किया जा रहा है, जहाँ शैक्षणिक अध्ययन के साथ-साथ सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, शारीरिक स्वास्थ्य और नैतिक मूल्योंके संवर्धन पर विशेष बल दिया गया है। प्रारंभिक वर्षों मेंखेल-आधारित शिक्षण पर इसका जोर इस तथ्य को स्वीकार करता है किजिज्ञासा और आनंदही आजीवन सीखने की सबसे सशक्त आधारशिलाएँ हैं। शिक्षा के आरंभिक वर्षों मेंमातृभाषा में शिक्षादेने का उद्देश्य बच्चों को अवधारणाओं की बेहतर समझ प्रदान करना है, जब कि बहुभाषिकता पर दिया गया बल ऐसी पीढ़ी के निर्माण की परिकल्पना करता है जो अपनी सांस्कृतिक और भाषायी जड़ों के प्रति विश्वास रखती हो तथा भारतीय ज्ञान परंपराओं को वैश्विक मंच पर आगे बढ़ाने में सक्षम हो। मूल्यांकन संबंधी सुधार भी इसी उद्देश्य को प्रतिबिंबित करते हैं।

(लेखक भारत सरकार में शिक्षा मंत्री हैं)

चीन को भी सख्त जवाब है बजट में

भारत मुश्किलों से निकलना जानता है. यह बात वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट भाषण में सिद्ध करने की कोशिश की. इस समय जो वैश्विक स्थिति है, उसके नकारात्मक असर से खुद बचाए रखने के साथ आगे बढ़ने का रास्ता बनाने की बड़ी चुनौती भारत के सामने थी. भारत की सबसे बड़ी प्राथमिकता पेट्रोलियम पदार्थों के आयात को न्यूनतम करने की थी. इसी को ध्यान में रखकर बजट में पेट्रोल-एथेनॉल के बाद सीएनजी में बायो-गैस ब्लेंडिंग की बड़ी योजना लाई गई है. अब कृषि-अपशिष्ट का इस्तेमाल भी बढ़ेगा और गैस एवं अन्य पेट्रोलियम उत्पादों का आयात भी कम होगा. बजट में ई बैटरी मैन्युफैक्चरिंग के लिए 35 अतिरिक्त कैपिटल गुड्स और मोबाइल फोन और इलेक्ट्रक वाहनों दोनों के लिए लिथियम-आयन बैटरी के घरेलू निर्माण को बढ़ावा मिलना शुरू हो जाएगा. इसके अलावा कोबाल्ट पाउडर, लिथियम आयन बैटरी के स्क्रैप, लेड, जिंक और 12 अन्य महत्वपूर्ण खनिजों पर से बेसिक कस्टम ड्यूटी को हटाने का भी ऐलान किया गया है. यह चीन को कड़ा जवाब है. इससे भारत में मैन्युफैक्चरिंग में मदद मिलेगी और रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे. भारत के पास रेयर अर्थ का पर्याप्त भंडार होने के बावजूद इसका उत्पादन बहुत कम है. चीन इस मामले में काफी आगे है और वह इस समय दुनिया को ब्लैकमेल कर रहा है. चीन लगभग 270,000 टन का इस समय उत्पादन कर रहा है. दुर्लभ खनिजों के लिए चीन पर निर्भरता को कम करने के लिए चार राज्यों- तमिलनाडु, केरल, ओडिशा और आंध्र प्रदेश में रेयर खनिजों के लिए डेडिकेटेड कॉरिडोर स्थापित करने का ऐलान किया गया है. यदि पर्याप्त मात्रा में रेयर अर्थ का उत्पादन शुरू हो जाता है तो भारत कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रिक वाहनों और यहां तक कि फाइटर जेट के उत्पादन में भी आगे हो जाएगा. भारत और पाकिस्तान के बीच मई में हुए युद्ध ने भारत के लिए रक्षा उत्पादन में भी आत्मनिर्भर होने का एक संदेश दिया. 2026-27 का रक्षा बजट पहली बार जीडीपी के 2 प्रतिशत तक बढ़ाया गया है. पिछले वित्त वर्ष के मुकाबले रक्षा बजट में 15.19 प्रतिशत की भारी वृद्धि की गई है. बढ़ा हुआ यह आवंटन न केवल नए तकनीक वाले शस्त्रों के निर्माण को बढ़ावा देगा, बल्कि सेना के आधुनिकीकरण में भी तेजी आएगी.

-विक्रम उपाध्याय

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

ग्वालियर चंबल डायरी

अपनी ही पार्टी को मुसीबत में डालने में जुटे भाजपा के नुमाइंदे

हरीश दुबे

निगम परिषद में सभापति की आसंदी पर कमल पुष्प खिला हुआ है, लेकिन जब भगवाधारी पार्षद ही नारेबाजी कर सभापति की आसंदी के नीचे धरना देकर बैठ जाएं तो अंदाज यही लगाया जाएगा कि भाजपा पार्षद दल में सब कुछ ठीक ठाक नहीं चल रहा है. इसी दल के पार्षद बृजेश श्रीवास पहले भी पार्टी की गाइडलाइन के बजाए जनहित को तरजीह देने का दावा कर अपनी पार्टी को संकट में डालने वाले हालात पैदा करते रहे हैं.

बीते तीन सालों से प्रतिनियुक्ति पर वजनदार पदों पर जमे अफसरों और कर्मचारियों से जुड़े मुद्दे को तूल देकर इस बार वे सभापति की आसंदी के समक्ष धरने पर बैठे तो परिषद की बैठक खत्म होने के बाद भी घंटों तक उठने का नाम नहीं लिया. उन्हें अपनी ही पार्टी के देवीसिंह राठौर और मनोज यादव का भी साथ मिला. उनके इस इहतेजाज की गाज म्युनिसिपल के दो जोनल अफसरों पर गिरी जिनका न सिर्फ वेतन रोक दिया गया बल्कि उनकी तैनाती के दौरान बनाए बिलों की जांच का हुक्मनामा भी जारी हो गया. पदेन व्यवस्था को लेकर सदन में पहले भी एतराज उठते रहे हैं, इस बार सभापति ने कमिश्नर से कह दिया है कि इस संबंध में पूर्व में जो ठहराव हुए हैं, उन पर मुकम्मल अमल हो.

फिलहाल, ग्वालियर निगम परिषद में करीब दर्जन भर एल्डरमैन की नियुक्ति का इंतजार किया जा रहा है. इन एल्डरमैनों के आने के बाद भाजपा पार्षद दल के समीकरण बदल जाएंगे. पिछली परिषद तक सिर्फ छह ही एल्डरमैन बनते थे, जिन्हें अब जस्ट डबल कर दिया गया है. वैसे ये एल्डरमैन ज्यादा अवधि तक पार्षदी का सुख नहीं भोग सकेंगे क्योंकि दो साल से भी कम अवधि में मौजूदा निगम परिषद का कार्यकाल पूरा होने जा रहा है.

संघ के पूर्व प्रचारकों का वर्कआउट

जनहित पार्टी का गठन तीन बरस पहले अभय जैन जैसे आरएसएस के पूर्व प्रचारकों द्वारा यह कहकर किया गया था कि उन हिंदुत्ववादी मतदाताओं को एक सार्थक विकल्प देंगे जो वर्तमान राजनीतिक संस्कृति से असंतुष्ट हैं. भगवा झंडे को अपनाने वाली इस नई नवेली पार्टी ने चुनावों में भी भागीदारी की है लेकिन न भाजपा को नुकसान पहुंचा सकी और न कांग्रेस को. खुद को अभी भी संघ के स्वयंसेवक मानने वालों की यह नई सियासी जमात पिछले साल ग्वालियर में अपना कौमी इजलास भी कर चुकी है जिसमें देशभर से नुमाइंदे आए थे.

बहरहाल, इस वक्त जनहित पार्टी का जिक्र इसलिए क्योंकि पार्टी के कार्यकर्ता इन दिनों भिंड के चंबल पुल से ग्वालियर तक पदयात्रा पर निकले हुए हैं, मांग भिंड ग्वालियर हाईवे को अपग्रेड करने की है. पार्टी को सवर्ण आर्मी का भी साथ मिला है. भिंड ग्वालियर हाईवे पर पिछले कुछ साल के दरम्यान सैकड़ों लोग सड़क हादसों में जान गंवा चुके हैं. मामला मानवीय संवेदनाओं से जुड़ा है. यही वजह है कि जनता में अपनी पैठ बढ़ाने जनहित के इस मुद्दे पर जनहित पार्टी वर्कआउट में जुटी है.

अनूप भी अब फ्रीस्टाईल बोल रहे

कभी ग्वालियर में सत्तापक्ष की मुख्यधारा के केंद्र बिंदु रहे अनूप मिश्रा फिलवक्त सियासत के हाशिए पर हैं. लगातार दो विधानसभा चुनाव हारने के बाद उन्हें न सत्ता में हिस्सेदारी मिली और न संगठन में एडजस्ट किया गया. लंबी उपेक्षा के दर्द ने उन्हें मुखर और बेलाग बना दिया है. वे इशारों ही इशारों में ऐसी बातें कह जाते हैं, जिनका निहितार्थ यही निकलता है कि उन्हें हाशिए पर धकेलने के लिए उन्हीं की पार्टी में गोलबंदी की गई. 2018 में भितरवार सीट से मिली हार का गम उन्हें अब तक है. बकौल, अनूप उन्हीं की पार्टी के मित्र नहीं चाहते थे कि वे चुनाव जीतें. 2023 में वे दक्षिण सीट से चुनाव लड़ना चाहते थे लेकिन उन्हें ग्वालियर पूर्व या भितरवार सीट ऑफर की गई, उन्होंने मना कर दिया. चार बार के विधायक, तीन सरकारों में मंत्री और एक दफा सांसद रह चुके अनूप संकेतों में यह कहने से भी नहीं चुके कि नरेन्द्र सिंह से अब उनके संबंध वैसे नहीं हैं, जैसे कई बरस पहले अन्ना और मुन्ना की जोड़ी के वक्त थे. सियासी गलियारों में अनूप को अन्ना और नरेन्द्र सिंह को मुन्ना कहा जाता रहा है. अनूप ने एक और रहस्य खोल दिया, वह यह कि साध्वी जब सीएम की कुर्सी छोड़कर गिरफ्तारी देने हुबली जा रहीं थीं तो अपनी जगह उन्हें ही सीएम बनाना चाहती थीं, वे कहते हैं कि यकीन नहीं तो गोपाल भार्गव, विश्नोई या कैलाश से पूछ लो...!

निशानेबाज

परदे में रहने दो, परदा न हटाओ फाइल के बारे में मत बताओ

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हमें हर महत्वपूर्ण दस्तावेज सुरक्षित और व्यवस्थित तरीके से फाइल में रखने की आदत है. हर व्यक्ति को क्लिप फाइल या बॉक्स फाइल का उपयोग सीखना चाहिए. अपना जन्म प्रमाणपत्र, एसएससी पास होने का सर्टिफिकेट, कॉलेज यूनिवर्सिटी की डिग्रियां, खेल या अन्य एक्टिविटी के प्रमाणपत्र फाइल में संभालकर जतन से रखो तो कभी भी काम आते हैं. पुराना पत्रव्यवहार भी फाइल में रखा जा सकता है.'

हमने कहा, 'सरकारी कार्यालयों में फाइलों का अंबार लगा रहता है. कोर्ट में भी मामले-मुकदमे की फाइलों का गट्ठा नजर आएगा. वकीलों के यहां ढेरसारी फाइलें मौजूद होती हैं. फाइल की चाल कछुए से भी धीमी होती है. वह एक टेबल से दूसरे टेबल तक बड़ी मुश्किल से पहुंचती है. अफसरशाही में अटकी हुई फाइल की वजह से प्रोजेक्ट लटक जाते हैं और लागत बढ़ जाती है. धूल खाती फाइलों की वजह से हमारे लोकतंत्र की प्रगति रुक जाती है. कुछ राज्यमंत्री इसलिए परेशान रहते हैं कि उनके पास फाइल ही नहीं पहुंचती.'

पड़ोसी ने कहा, 'पुरानी फाइलों में कई रहस्य छुपे रहते हैं. इसलिए ऐसी फाइल का सार्वजनिक रूप से जिक्र नहीं करना चाहिए. स्व. अजीत पवार ने 15 जनवरी को सबके सामने कहा था कि उनके पास बीजेपी नेताओं के घोटाले की फाइल है जिसे शीघ्र ही उजागर किया जाएगा. अजीत ने कहा था कि 1995-99 में शिवसेना-बीजेपी की सरकार थी. चुनाव हारने से सत्ता छिन गई. फिर कांग्रेस-एनसीपी की सरकार बनी जिसमें मुझे कृष्णा घाटी विकास निगम की जिम्मेदारी मिली. तब पुरंदर लिफ्ट इरिगेशन की लागत 330 करोड़ रुपये बताई गई थी. मुझे मालूम पड़ा कि उसमें 100 करोड़ रुपये पार्टी फंड के नाम पर और 10 करोड़ रुपये अधिकारियों की रिश्वत के नाम पर थे. मैंने पिछली सेना-बीजेपी सरकार की योजना को रद्द कर दिया और नया टेंडर 220 करोड़ रुपये में पास करवाया. बीजेपी के इस भ्रष्टाचार की फाइल आज भी मेरे पास मौजूद है.'

हमने कहा, 'इस रहस्योद्घाटन का आखिर क्या नतीजा निकला ! इसीलिए कहा गया है कि पानी में रहकर मगर से बैर नहीं करना चाहिए. अब वह फाइल कभी सामने नहीं आएगी. पता नहीं, कब कौन सी फाइल जानलेवा बन जाए! इसलिए परदे में रहने दो, परदा न हटाओ, परदा जो हट गया तो भेद खुल जाएगा.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12162

-डॉ. सागर खादीवाला

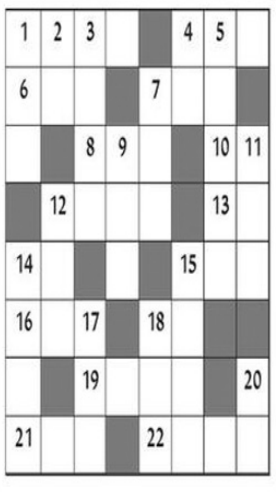

ऊपर से नीचे

1. आगमन, आना, आय (उर्दू) 2. घोड़े, गधे, ऊंट, हाथी और पशुओं का मल 3. तड़क-भड़क वाला, भव्य, वैभवपूर्ण (उर्दू) 4. थोड़े से, कुछ, दो-चार (उर्दू) 5. पापी, दोषी (उर्दू) 7. एक भूत योनि, शिव का एक गण, द्वारपाल 9. समतल, जिसकी सतह पर कोई उभरी हुई वस्तु न हो 11. अरब का एक प्रसिद्ध शहर 12. वह स्थान जहां से तीन ओर तीन रास्ते गए हों 14. कुल, वंश 15. चमकना, आभास होना 17. असफल, नाकामयाब (उर्दू) 18. ईश्वर, स्वामी 20. पत्ता, गिरने या गिराने का भाव या क्रिया

बाएं से दाएं

1. बड़ी शान वाला, शानदार, गौरवमय (उर्दू) 4. पंजा, पकड़, शिकारी चिड़ियों का पंजा 6. कामदेव 7. पीड़ा, व्यथा 8. गुलामी, परतंत्रता 10. 'मैं' का बहुवचन 12. रोगन फेरा हुआ एक प्रकार का टाट जिससे वर्षा या धूप से बचाव होता है 13. गद्दी, एक पकवान 14. नमक के स्वाद का 15. निर्झर, झड़ना 16. स्नान करना 18. सामग्री, सामान, धन, संपत्ति, माला 19. शैव संप्रदाय का तांत्रिक साधु (सं.) 21.कोमल 22. पितृ पक्ष, श्राद्ध

Solution 12161

बे	गा	र	■	ल	य	■	च
ई	दी	■	■	ता	म	सि	क
मा	■	ग	ता	■	ज	ल	वा
नी	म	ह	कि	म	■	सि	■
■	स	न	द	■	प्र	ला	प
सा	ख	■	■	चू	क	■	रि
ध	रा	शा	यी	■	र	■	च
न	■	क्य	■	प्रा	ण	प्रि	य

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में सामाजिक कार्यों में संलग्नता रहेगी, व्यापार व्यवसाय में वृद्धि होगी, राजनैतिक लाभ होगा, वर्ष के मध्य में व्यवसाय की स्थिति मेंसुधार होगा, आय के अन्य स्त्रोतों में वृद्धि होगी, पूर्व परिचित से भेंट होगी, सफलता मिलेगी, मन में प्रसन्नता रहेगी, वर्ष के अन्त में अनावश्यक विवाद से मन खिन्न रह सकता है, स्थान परिवर्तन का योग है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट और मानसिक चिन्ता रहेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा, शुभ समाचार मिलेगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक लाभ होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को परिश्रम व उदासीनता रहेगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को खानपान पर ध्यान देना पडेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को आपसी सामंजस्य के साथ काम लेना हितकर रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, मिलनसार, कानून न्याय के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. भूमि भवन मकान आदि का सुख रहेगा. नौकरी में विशेष उन्नति होगी. खर्चीले स्वभाव का होगा. जीवन में बड़ी परेशानियों का सामना करना पड सकता है पर वह बुद्धिमत्ता से उन पर विजय प्राप्त करेगा.

मेष- प्रियजनों के साथ समारोह में शामिल होने का अवसर मिलेगा. समाज में सम्मान मिलेगा. किसी विशिष्ट व्यक्ति के सहयोग से मन में विशेष हर्ष होगा.

वृषभ- रचनात्मक कार्यों से जुड़े लोगों से भेंट होगी. कोर्ट कचहरी आदि से संबंधित कार्यों में यथेष्ठ सफलता मिलेगी. कार्य की समस्या हल होगी. उत्साह बना रहेगा.

मिथुन- जरूरत मन्दों की मदद करके आप खुश होगें. अधीनस्थें से विवाद की अशंका है. विद्या के क्षेत्र में उन्नति का योग है. कामकाज की रूपरेखा बनेगी.

कर्क- किसी से अचानक मुलाकात रिश्ते में बदल सकती है. आय में वृद्धि होगी. मित्रों एवं अपने निकट व्यक्तियों के सहयोग से आपको मनचाही वस्तु मिलेगी.

सिंह- मांगलिक कार्य में शामिल होकर प्रसन्न होंगे. विरोधियों से सावधान रहें. पारिवारिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. आर्थिक एवं व्यापारिक लाभ मिलेगा.

कन्या- विवादास्पद मामले सुलझाने का प्रयास करेंगे. लेने देन में सावधानी रखें. आपकी चिन्ताओं व परेशानियों का निवारण होगा. यश प्राप्त होने का योग है.

तुला- विद्यार्थी को विदेश जाने का अवसर मिल सकता है. समझादारी में लाभदायक योजना शुरू हो सकती है. पारिवारिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी.

वृश्चिक- प्रेम प्रसंग में सफलता मिलने का योग है. धैर्य रखकर कार्य करने से लाभ होगा. आपके अधिकार क्षेत्र का विस्तार होगा. हितकारी व लाभदायक सूचना प्राप्त होगी.

धनु- कार्यक्षेत्र में चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा. प्रियजनों से मुलाकात सुखद रहेगी. स्त्री जाति की सलाह उपयोगी रहेगी. अतिथि आगमन का योग है.

मकर- अपने ही लोग आपके सीधेपन का लाभ उठायेंगे. बुजुर्गों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें. अनपेक्षित आगन्तुकों से धन व्यय होगा. परिश्रम सार्थक होगा.

कुम्भ- घर और आफिस में तालमेल बनाना मुश्किल होगा. मेहनत के अनुरूप लाभ में कमी होगी. इष्ट मित्रों का कुटुम्बियों से सहयोग रहेगा. यात्रा आदि में व्यय होगा.

मीन- अचानक लाभ में कमी आने से खिन्नता रहेगी. बेरोजगारों को रोजगार के अवसर मिलेंगे. आलस्य को त्यागें. परिश्रम अधिक रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

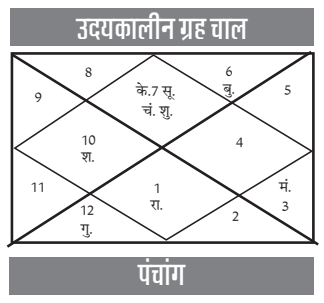

पंचांग

रा.मि. 16 संवत् 2082 फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी गुरूवासरे रात 1/40, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रे रात 12/24, सुकर्मा योगे रात 1/42, वव करणे सू.उ. 6/31, सू.अ. 5/29, चन्द्रचार कन्या, पर्व- संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, शु.रा. 6,8,9,12,1,4 अ.रा. 7,10,11,2,3,5 शुभांक- 8,0,5.

व्यापार भविष्य

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, गुड, खांड, रूई, सूत, गेहूं, जौ, चना, सरसों, तिल, तेल के भावों में तेजी होगी. वायदा विचार आज शेयर बाजारों में पिछले रूख पर व्यापार करना लाभप्रद रहेगा. भाग्यांक 2859 है.

SUDOKU 7294

	7	9	4	2		6		3
	6		8		7		2	
4	1				3	5	8	
	9	8	3					
7		4		5		8		1
					9	7	3	
	8	5	7				4	6
	2		9		1		5	
3		1		6	8	9	7	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7293

8	9	5	1	3	7	2	4	6
7	3	2	6	5	4	1	8	9
1	6	4	8	9	2	7	5	3
5	7	3	4	2	9	6	1	8
4	2	8	5	6	1	3	9	7
6	1	9	3	7	8	5	2	4
3	5	1	9	4	6	8	7	2
2	4	6	7	8	5	9	3	1
9	8	7	2	1	3	4	6	5